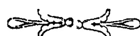
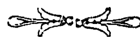
बीर-बधू-सिख-नख



हे प्रभु ! बीर-बधू-सिख-नख जो,
पढ़ै सुनै चित ल्यावै।
घर-घर सुघर बिस्व बिजयी वर,
बीर-बधू बन जावै ॥



लेखक
नाथूराम माहौर,
झाँसी